|| श्री सूर्य चालीसा ||

|| ॐ गणेशाय नमः ||

|| दोहा ||

श्री रवि हरत हो घोर तम, अगणित किरण पसारी |
वंदन करू तब चरणन में, अर्ध्य देऊ जल धारी ||

सकल सृष्टि के स्वामी हो, सचराचर के नाथ |
निसदिन होत तुमसे ही, होवत संध्या प्रभात ||

|| चौपाई ||

जय भगवान सूर्य तम हरी, जय खगेश दिनकर शुभकारी |
तुम हो सृष्टि के नेत्र स्वरूपा, त्रिगुण धारी त्रै वेद स्वरूपा ||

तुम ही करता पालक संहारक, भुवन चतुदर्श के संचालक |
सुंदर बदन चतुर्भुज धारी, रश्मि रथी तुम गगन विहारी ||

चक्र शंख अरु श्वेत कमलधर, वरमुद्रा सोहत चोटेकर |
शीश मुकुट कुंडल गल माला, चारु तिलक तब भाल विशाला ||

सप्त अश्व रथ अतिद्रुत गामी, अरुण सारथी गति अविरामी |
रक्त वरुण आभूषण धारक, अतिप्रिय तोहे लाल पदार्थ ||

सर्वात्मा कहे तुम्हें ऋग्वेदा, मित्र कहे तुमको सब वेदा |
पंचदेवों में पूजे जाते, मनवांछित फल साधक पाते ||

द्वादश नाम जाप उदधारक, रोग शोक अरु कष्ट निवारक |
माँ कुन्ती तब ध्यान लगायों, दानवीर सूत कर्ण सो पायो ||

राजा युधिष्ठिर तब जस गायों, अक्षय पात्र वो वन में पायो |
शस्त्र त्याग अर्जुन अकुरायों, बन आदित्य ह्रदय से पायो ||

विंध्याचल तब मार्ग में आयो, हाहाकार तिमिर से छायों |
मुनि अगस्त्य गिरि गर्व मिटायो, निजटक बल से विंध्य नवायो ||

मुनि अगस्त्य तब महिमा गायी, सुमिर भये विजयी रघुराई |
तोहे विरोक मधुर फल जाना, मुख में लिन्ही तोहे हनुमाना ||

तब नंदन शनिदेव कहावे, पवन के सूत शनि तीर मिटावे |
यज्ञ व्रत स्तुति तुम्हारी किन्ही, भेंट शुक्ल यजुर्वेद की दीन्ही ||

सूर्यमुखी खरी तर तब रूपा, कृष्ण सुदर्शन भानु स्वरूपा |
नमन तोहे ओंकार स्वरूपा, नमन आत्मा अरु काल स्वरूपा ||

दिग दिगंत तब तेज प्रकाशे, उज्ज्वल रूप तुम्ही आकाशे |
दश दिग्पाल करत तब सुमिरन, अंजली नित्य करत हैं अर्पण ||

त्रिविध ताप हरता तुम भगवन, ज्ञान ज्योति करता तुम भगवन |
सफल बनावे तब आराधन, गायत्री जप सरल है साधन ||

संध्या त्रिकाल करत जो कोई, पावे कृपा सदा तब वो ही |
चित शांति सूर्याष्टक देवे, व्याधि अपाधि सब हर लेवे ||

अष्टदल कमल यंत्र शुभकारी, पूजा उपासन तब सुखकारी |
माघ मास शुद्ध सप्तमी पावन, आरंभ हो तब शुभ व्रत पालन ||

भानु सप्तमी मंगलकारी, भक्ति दायिनी दोषण हारी |
रविवासर जो तुमको ध्यावे, पुत्रादिक सुख वैभव पावे ||

पाप रूपी पर्वत के विनाशी, व्रज रूप तुम हो अविनाशी |
राहू आन तब ग्रास बनावे, ग्रहण सूर्य तोको लग जावे ||

धर्म दान तप करते है साधक, मिटत राहू तब पीड़ा बाधक |
सूर्य देव तब कृपा कीजे, दीर्घ आयू बल बुद्धि दीजे ||

सूर्य उपासना कर नित ध्यावे, कुष्ट रोग से मुक्ति पावे |
दक्षिण दिशा तोरी गति जावे, दक्षिणायन वो ही कहलावे ||

उत्तर मार्गी तोरो रथ होवे, उत्तरायण तब वो कहलावे |
मन अरु वचन कर्म हो पावन, संयम करता भलित आराधन ||

|| दोहा ||

भरत दास चिंतन करत, घर दिनकर तब ध्यान |
रखियों कृपा इस भक्त पे, तुम्हारी सूर्य भगवान ||

|| ॐ श्री सूर्य देवाय नमः ||

www.hanumanchalisalyric.com